प्रदीप
शनि
चालीसा
आरती सहित

प्रदीप

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री शनि चालीसा

श्री शनि यंत्र, मंत्र एवं आरती सहित

प्रदीप पब्लिशर्ज़
नज़दीक ट्यूबवैल, अड्डा टांडा, जालन्धर।

मूल्य 10–

श्री शनि पूजन यंत्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

यह शनि का तैंतीस अंकीय यंत्र है। शनिवार को गुलाब या गंगाजल में घुली काली स्याही से नीले रंग के कागज या भोजपत्र पर इसका निर्माण करें। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि उस शनिवार को व्याघातकारक योग न हो। शुद्ध लोहे या जस्ते के पत्र पर भी इसका निर्माण करवाया जा सकता है। यंत्र की स्थापना कर नीचे दिए मंत्र का 23,000 बार रुद्राक्ष की माला से जप करना चाहिए।

मंत्र : ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।

श्री शनि चालीसा (1)

॥ दोहा ॥

जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल करण कृपाल।
दीनन के दुख दूर करि, कीजै नाथ निहाल॥
जय जय श्री शनिदेव प्रभु, सुनहु विनय महाराज॥
करहु कृपा हे रवि तनय, राखहु जन की लाज॥

॥ चौपाई ॥

जयति जयति शनिदेव दयाला।
करत सदा भक्तन प्रतिपाला॥

चारि भुजा, तनु श्याम विराजै।
माथे रतन मुकुट छवि छाजै॥
परम विशाल मनोहर भाला।
टेढ़ी दृष्टि भृकुटि विकराला॥
कुण्डल श्रवण चमाचम चमकै।
हिये माल मुक्तन मणि दमकै॥
कर में गदा त्रिशूल कुठारा।
पल बिच करैं अरिहिं संहारा॥
पिंगल, कृष्णो, छाया, नन्दन।
यम, कोणस्थ, रौद्र, दुख भंजन॥

सौरी, मन्द, शनि, दश नामा।
भानु पुत्र पूजहिं सब कामा॥
जापर प्रभु प्रसन्न ह्वै जाहीं।
रंकहुँ राव करैं क्षण माहीं॥
पर्वतहू तृण होई निहारत।
तृणहू को पर्वत करि डारत॥
राज मिलत बन रामहिं दीन्हो।
कैकेइहुँ की मति हरि लीन्हो॥
बनहूँ में मृग कपट दिखाई।
मातु जानकी गई चुराई॥

लषणहिं शक्ति विकल करि डारा।
मचि गई दल में हाहाकारा॥
रावण की गति-मति बौराई।
रामचन्द्र सों बैर बढ़ाई॥
दियो कीट करि कंचन लंका।
बजि बजरंग बीर की डंका॥
नृप विक्रम पर तुहि पगु धारा।
चित्र मयूर निगलि गै हारा॥
हार नौलखा लाग्यो चोरी।
हाथ पैर डरवायो तोरी॥

भारी दशा निकृष्ट दिखायो।
तेलहिं घर कोल्हू चलवायो॥
विनय राग दीपक महँ कीन्हो।
तब प्रसन्न प्रभु ह्वै सुख दीन्हो॥
हरिश्चन्द्र नृप नारि बिकानी।
आपहुं भरे डोम घर पानी॥
तैसे नल पर दशा सिरानी।
भूंजी-मीन कूद गई पानी॥
श्री शंकरहिं गह्यो जब जाई।
पारवती को सती कराई॥

तनिक विलोकत ही करि रीसा ।
नभ उड़ि गयो गौरिसुत सीसा ॥
पाण्डव पर भै दशा तुम्हारी ।
बची द्रोपदी होति उघारी ॥
कौरव के भी गति मति मारयो ।
युद्ध महाभारत करि डारयो ॥
रवि कहँ मुख महँ धरि तत्काला ।
लेकर कूदि परयो पाताला ॥
शेष देव-लखि विनती लाई ।
रवि को मुख ते दियो छुड़ाई ॥

वाहन प्रभु के सात सुजाना।
गज दिग्गज गर्दभ मृग स्वाना॥
जम्बुक सिंह आदि नख धारी।
सो फल ज्योतिष कहत पुकारी॥
गज वाहन लक्ष्मी गृह आवैं।
हय ते सुख सम्पत्ति उपजावैं॥
गर्दभ हानि करै बहु काजा।
सिंह सिद्धकर राज समाजा॥
जम्बुक बुद्धि नष्ट कर डारै।
मृग दे कष्ट प्राण संहारै॥

जब आवहिं प्रभु स्वान सवारी।
चोरी आदि होय डर भारी॥
तैसहि चारि चरण यह नामा।
स्वर्ण लौह चाँदी अरु तामा॥
लौह चरण पर जब प्रभु आवैं।
धन जन सम्पत्ति नष्ट करावैं॥
समता ताम्र रजत शुभकारी।
स्वर्ण सर्व सर्वसुख मंगल भारी।
जो यह शनि चरित्र नित गावै।
कबहुं न दशा निकृष्ट सतावै॥

अद्भुत नाथ दिखावैं लीला।
करैं शत्रु के नशि बलि ढीला॥
जो पण्डित सुयोग्य बुलवाई।
विधिवत शनि ग्रह शांति कराई॥
पीपल जल शनि दिवस चढ़ावत।
दीप दान दै बहु सुख पावत॥
कहत राम सुन्दर प्रभु दासा।
शनि सुमिरत सुख होत प्रकाशा॥

// दोहा //

पाठ शनिश्चर देव को, कीन्हों 'भक्त' तैयार।
करत पाठ चालीस दिन, हो भवसागर पार॥

सिद्ध शनि चालीसा (2)

॥ दोहे ॥

सुख मूरि गुरु चरण-रज, सुखद अलौकिक धूल।
मन के पाप विकार को, नासै तुरत समूल॥
दुःख दाता शनिदेव की, कहूँ चालीसा सिद्ध।
शनि कृपा से दूर हों, ताप, कष्ट अरु शूल॥
दुःख घने मैं बुद्धि मन्द, शनि सुख-दुःख के हेतु।
सर्व सिद्धि, सफलता दो, हरो कष्ट भव-सेतु॥
जग दारुण दुःख बेलड़ी, मैं एक हाय! असहाय।
विपद-सेना विपुल बड़ी, तुम बिना कौन सहाय॥

// चौपाई //

शनिदेव कृपालु रवि-नन्दन।
सुमिरण तुम्हारा सुख-चन्दन॥
नाश करो मेरे विघ्नों का।
कृपा सहारा दुःखी जनों का॥
जप नाम सुमिरण नहीं कीन्हा।
तभी हुआ बल बुद्धि हीना॥
विपद क्लेश कष्ट के लेखे।
रवि सुत सब तव रिस के देखे॥

क्रूर तनिक बभ्रु की दृष्टि ।
तुरत करै दारुण जप दुःख-वृष्टि ॥
कृष्ण नाम जप "राम कृष्णा" ।
कोणस्थ मन्द हरैं सब तृष्णा ॥
पिंगल, सौरि, शनैश्चर, मन्द ।
रौद्र, यम कृपा जगतानन्द ॥
कष्ट क्लेश, विकार घनेरे ।
विघ्न, पाप हरो शनि मेरे ॥
विपुल समुद्र दुःख-शत्रु-सेना ।
कृष्ण सारथि नैया खेना ॥

सुरासुर नर किन्नर विद्याधर।
पशु, कीट अरु नभचर जलचर॥
राजा रंक व सेठ, भिखारी।
दे व्याकुलता गति बिगाड़ी॥
दुःख, दुर्भिक्ष, दुस्सह संतापा।
अपयश कहीं, घोर उत्पाता॥
कहीं पाप, दुष्टता व्यापी।
तुम्हरे बल दुःख पावै पापी॥
सुख सम्पदा साधन नाना।
तव कृपा बिन राख समाना॥

मन्द ग्रह दुर्घटना कारक।
साढ़े साती से सुख-संहारक॥
कृपा कीजिए दुःख के दाता।
जोरि युगल कर नावऊँ माथा॥
हरीश्चन्द्र से ज्ञानी राजा।
छीन लिए तुम राज-समाजा॥
डोम चाकरी, टहल कराई।
दारुण विपदा पर विपद चढ़ाई॥
गुरु सम सबकी करो ताड़ना।
बहुत दीन हूँ, नाथ उबारना॥

तिहुँ लोक के तुम दुःख दाता।
कृपा कोर से जन सुख पाता॥
जौं, तिल, लोहा, तेल, अन्न, धन।
तम उड़द, गुड़ प्रिय मन भावन॥
यथा सामर्थ्य जो दान करे।
शनि सुख के सब भण्डार भरे॥
जे जन करैं दुःखी की सेवा।
शनि-दया की चखैं नित मेवा॥
बुरे स्वप्न से शनि बचावें।
अपशकुन को दूर भगावें॥

दुर्गति मिटे दया से उनकी।
हरैं दुष्ट-क्रूरता मन की॥
दुष्ट ग्रहों की पीड़ा भागे।
रोग निवारक शक्ति जागे॥
सुखदा, वरदा, अभयदा मन्द।
पीर, पाप ध्वंसक रविनन्द॥
दुःख, दावग्नि विदारक मंद।
धारण किए धनुष, खंग, फंद॥
विकटट्टहास से कंपित जग।
गीध संवार शनि, सदैव सजग॥

जय-जय-जय करो शनि देव की।
विपद विनाशक देव देव की॥
प्रज्जवलित होइए, रक्ष रक्ष।
अपमृत्यु नाश में पूर्ण दक्ष॥
काटो रोग भय कृपालु शनि।
दुःख शमन करो, अब प्राण बनी॥
मृत्यु भय को भगा दीजिए।
मेरे पुण्यों को जगा दीजिए॥
रोग शोक को जड़ से काटो।
शत्रु को सबल शक्ति से डांटो॥

काम, क्रोध, लोभ, भयंकरारि।
करो उच्चारटन भक्त-पुरारि॥
भय के सारे भूत भगा दो।
सुकर्म पुण्य की शक्ति जगा दो॥
जीवन दो, सुख दो, शक्ति दो।
शुभ कर्म कृपा कर भक्ति दो॥
बाधा दूर भगा दो सारी।
खिले मनोकामना फुलवारी॥
शुद्ध मन दुःखी जन पढ़े चालीसा।
शनि सहाय हों सहित जगदीसा॥

बढ़ै दाम दस पानी बरखा।
परखो शनि शनि तुम परखा॥

॥ दोहा ॥

चालिस दिन के पाठ से, मन्द देव अनुकूल।
'राम कृष्ण' कष्ट घटैं सूक्ष्म अरु स्थूल॥
दशरथ शूरता स्मरण, मंगलकारी भाव।
शनि मंत्र उच्चारित, दुःख विकार निर्मूल॥

श्री शनि चालीसा (3)

॥ दोहा ॥

श्री शनिश्चर देवजी, सुनहु श्रवण मम् टेर।
कोटि विघ्ननाशक प्रभो, करो न मम् हित देर॥

॥ सोरठा ॥

तव स्तुति हे नाथ, जोरि जुगल कर करत हौं।
करिये मोहि सनाथ, विघ्नहरन हे रवि सुवन॥

॥ चौपाई ॥

शनिदेव मैं सुमिरौं तोही।
विद्या बुद्धि ज्ञान दो मोही॥

तुम्हरो नाम अनेक बखानौं।
क्षुद्रबुद्धि मैं जो कुछ जानौं॥
अन्तक, कोण, रौद्रय मनाऊँ।
कृष्ण बभ्रु शनि सबहिं सुनाऊँ॥
पिंगल मन्दसौरि सुख दाता।
हित अनहित सब जग के ज्ञाता॥
नित जपै जो नाम तुम्हारा।
करहु व्याधि दुःख से निस्तारा॥
राशि विषमवस असुरन सुरनर।
पन्नग शेष सहित विद्याधर॥

राजा रंक रहहिं जो नीको।
पशु पक्षी वनचर सबही को॥
कानन किला शिविर सेनाकर।
नाश करत सब ग्राम्य नगर भर॥
डालत विघ्न सबहि के सुख में।
व्याकुल होहिं पड़े सब दुःख में॥
नाथ विनय तुमसे यह मेरी।
करिय मोपर दया घनेरी॥
मम हित विषम राशि महँवासा।
करिय न नाथ यही मम आसा॥

जो गुड़ उड़द दे बार शनीचर।
तिल जव लोह अन्न धन बस्तर॥
दान दिये से होय सुखारी।
सोइ शनि सुन यह विनय हमारी॥
नाथ दया तुम मोपर कीजै।
कोटिक विघ्न क्षणिक महँ छीजै॥
वंदत नाथ जुगल कर जोरी।
सुनहु दया कर विनती मोरी॥
कबहुँक तीरथ राज प्रयागा।
सरयू तोर सहित अनुरागा॥

कबहुँ सरस्वती शुद्ध नार महँ।
या कहुँ गिरी खोह कंदर महँ॥
ध्यान धरत हैं जो जोगी जनि।
ताहि ध्यान महँ सूक्ष्म होहि शनि॥
है अगम्य क्या करूँ बड़ाई।
करत प्रणाम चरण शिर नाई॥
जो विदेश से बार शनीचर।
मुड़कर आवेगा निज घर पर॥
रहैं सुखी शनि देव दुहाई।
रक्षा रवि सुत रखैं बनाई॥

जो विदेश जावैं शनिवारा।
गृह आवैं नहिं सहै दुखारा॥
संकट देय शनीचर ताही।
जेते दुखी होई मन माही॥
सोई रवि नन्दन कर जोरी।
वन्दन करत मूढ़ मति थोरी॥
ब्रह्मा जगत बनावन हारा।
विष्णु सबहिं नित देत अहारा॥
हैं त्रिशूलधारी त्रिपुरारी।
विभू देव मूरति एक वारी॥

इक होइ धारण करत शनि नित।
वंदत सोई शनि को दमन चित॥
जो नर पाठ करै मन चित से।
सो नर छूटै व्यथा अमित से॥
हौं सुपुत्र धन सन्तति बाढ़े।
कलि काल कर जोड़े ठाढ़े॥
पशु कुटुम्ब बांधन आदि से।
भरो भवन रहिहैं नित सबसे॥
नाना भांति भोग सुख सारा।
अन्त समय तजकर संसारा॥

पावै मुक्ति अमर पद भाई।
जो नित शनि सम ध्यान लगाई॥
पढ़ै प्रात जो नाम शनि दस।
रहैं शनिश्चर नित उसके बस॥
पीड़ा शनि की कबहुँ न होई।
नित उठ ध्यान धरै जो कोई॥
जो यह पाठ करैं चालीसा।
होय सुख साखी जगदीशा॥
चालिस दिन नित पढ़ै सबेरे।
पातक नाशै शनी घनेरे॥

रवि नन्दन की अस प्रभुताई।
जगत मोहतम नाशै भाई॥
याको पाठ करै जो कोई।
सुख सम्पति की कमी न होई॥
निशिदिन ध्यान धरै मनमाहीं।
आधिव्याधि ढिंग आवै नाहीं॥

// दोहा //

पाठ शनीश्चर देव को, कीन्हों 'विमल' तैयार।
करत पाठ चालीस दिन, हो भवसागर पार॥
जो स्तुति दशरथ जी कियो, सम्मुख शनि निहार।
सरस सुभाषा में वही, ललिता लिखें सुधार॥

श्री शनिदेव जी की आरती

जय जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी।
सूर्य के पुत्र प्रभु छाया महतारी॥ जय जय
श्याम अंग वक्र-दृष्टि चतुर्भुजा धारी।
नीलाम्बर धार नाथ गज की असवारी॥ जय जय
क्रीट मुकुट शीश राजित दिपत है लिलारी।
मुक्तन की माला गले शोभित बलिहारी॥ जय जय
मोदक मिष्ठान पान चढ़त हैं सुपारी।
लोहा तिल तेल उड़द महिषी अति प्यारी॥ जय जय
देव दनुज ऋषि मुनि सुमिरत नर नारी।
विश्वनाथ धरत ध्यान शरण हैं तुम्हारी॥ जय जय

प्रदीप सर्वग्रह शनि स्तोत्र

इस 'कलिकाल' में प्रत्येक प्राणी किसी न किसी दुःख, संकट में ग्रस्त हो कर सुख की प्राप्ति के लिये जगह-जगह भटकता है। दुःख के लिये किसी न किसी नवग्रह की करोपी मान लेता है। सभी ग्रहों को शांत करने व ऋण से मुक्ति के लिये 'प्रदीप सर्वग्रह शनि स्तोत्र' का पाठ करें। अपने नज़दीक के बुक-सैलर से खरीदिये। *मूल्य : 12/-*

प्रदीप संकट मोचन

'प्रदीप संकट मोचन' का पाठ करने से हर मनोकामना पूर्ण होती है। मन में दृढ़ विश्वास पैदा होता है। हर प्रकार के संकट से छुटकारा मिलता है। जादू, टूने, डर व छाया हर प्रकार के संकट हनुमान जी स्वयं दूर करते हैं। अपने नज़दीक के बुक-सैलर से खरीदिये। *मूल्य : 12/-*